



१६. रेडियो जॉकी

– अनुराग पांडेय

लेखक परिचय : अनुराग पांडेय जी का जन्म ११ जुलाई १९७४ को सीधी (मध्य प्रदेश) में हुआ। आपने विज्ञान में स्नातक की शिक्षा देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से प्राप्त की। युवाओं के लिए कार्यक्रम का संचालन, मंच संचालन, टी.वी. चैनल के लिए पार्श्व आवाज, अंग्रेजी सिनेमाओं और टेलीविजन के लिए हिंदी में डबिंग आदि कार्यों से आप जुड़े रहे। आपने रेडियो के लिए पच्चीस से अधिक नाटकों का लेखन कार्य किया है।

रेडियो जॉकी : 'रेडियो जॉकी' में मनोरंजन के लिए दो से अधिक भाषाओं का ज्ञान रखते हुए शीघ्रातिशीघ्र संवादों को व्यक्त करने की अद्भुत कला होती है। रेडियो जॉकी में भाषा का मिश्र रूप हमें सुनाई देता है। अद्भुत और कलात्मक रेडियो जॉकीग करने के कारण श्रोता वर्ग इनकी ओर आकर्षित होता है। वर्तमान में शहरों में इस कला को युवा पीढ़ी द्वारा बहुत अधिक रूप में पसंद किया जा रहा है।

पाठ परिचय : प्रस्तुत साक्षात्कार में रेडियो जॉकी के क्षेत्र में रोजगार के विपुल अवसरों की जानकारी दी गई है। रेडियो जॉकी को करियर के रूप में चुनने के लिए आवश्यक योग्यताओं का उल्लेख करते हुए साक्षात्कारदाता ने सामाजिक जागरूकता जगाने में आर.जे. की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला है। अपनी अभिव्यक्ति करने तथा रोजगार के रूप में भी रेडियो जॉकी उपयोगी तथा प्रभावी लगता है।



(रेडियो जॉकी अनुराग पांडेय जी से युवक श्री प्रगल्भ की बातचीत)

प्रगल्भ : नमस्ते, अनुराग जी ! आपका बहुत-बहुत स्वागत है।

अनुराग : जी, धन्यवाद ! मुझे खुशी है कि आप जैसे नवयुवक 'रेडियो जॉकी' की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। यह समय की माँग है।

प्रगल्भ : अनुराग जी, यह बताइए कि रेडियो जॉकी की संकल्पना क्या है?

अनुराग : 'रेडियो जॉकी' शब्द से ही स्पष्ट है कि यह 'रेडियो' और 'जॉकी' इन दो शब्दों के मेल से बना है। 'जॉकी' शब्द के कई अर्थ हैं जैसे – राइडर (अश्वारोही), डिप्लॉय (फैलाना), मूव (संचालित करना), स्टीयर (प्रस्तुत करना), टर्न (घुमाना)। प्रचलित अर्थ के आधार पर जॉकी अर्थात् राइडर, अश्वारोही। ऐसा व्यक्ति जो घोड़े पर सवार है जो यह ध्यान रखे कि घुड़दौड़ में उसका घोड़ा सबसे आगे रहे। 'रेडियो जॉकी' भी ऐसा कार्यक्रम संचालक होता है जो कुशलतापूर्वक अपने चैनल के किसी भी कार्यक्रम को इस खूबी से संचालित या प्रस्तुत करता है कि उसका चैनल और कार्यक्रम सबसे आगे रहे।

समय के साथ-साथ सब कुछ बदलता जा रहा है। एक जमाने में रेडियो जॉकी उद्घोषक होते थे, अनाउन्सर होते थे। तब वह कार्य आकाशवाणी के माध्यम से सरकारी हिसाब से होता था। मुख्यतः इन्फॉर्मेशन देना वह कार्य था, फिर धीरे से इंफोटेनमेंट आ गई। इन्फॉर्मेशन विथ एंटरटेनमेंट हो गई। जैसे-जैसे रेडियो का प्रसार होने लगा वैसे-वैसे रेडियो इंफोटेनमेंट का माध्यम बन गया।

प्रगल्भ : आर.जे. के लिए प्रवेश प्रक्रिया क्या होती है?

अनुराग : ऑल इंडिया रेडियो में नौकरी प्राप्त करने के लिए स्टाफ सिलेक्शन कमिशन (कर्मचारी चयन आयोग) तथा ऑल इंडिया रेडियो द्वारा परीक्षा होती है। यह परीक्षा देने के लिए स्नातक पदवी प्राप्त करना आवश्यक है। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। उसके पश्चात प्रत्यक्ष साक्षात्कार होने के बाद उम्मीदवार का चयन किया जाता है। ऑल इंडिया रेडियो के साथ क्षेत्रीय स्टेशन पर भी ऐसी परीक्षा होती है। स्थानीय लोगों को इसके जरिए काम करने का मौका मिल सकता है।

निजी रेडियो चैनल में आपकी कला और प्रतिभा देखी जाती है। मुझे ऐसा लगता है, यहाँ भी स्नातक पदवी प्राप्त करना जरूरी है क्योंकि स्नातक होने के बाद आपकी समाज के प्रति और लोगों की मनोभावना तथा मनोविज्ञान के प्रति समझ बढ़ जाती है। रेडियो जॉकी के लिए ज्ञान और अनुभव की आवश्यकता होती है। जिसे इस क्षेत्र में सफल होना है, उसे निरंतर पढ़ना अति आवश्यक होता है। कलाकार एक बीज के समान होता है, जहाँ उसे धूप, पानी, मिट्टी मिली तो वह पनपने लगता है, वैसे ही आपके पास आर.जे. बनने के गुण हैं तो मौका मिलते ही वे पनपने लगेंगे और लोगों की नजर में आएँगे।

प्रगल्भ : क्या आर.जे. का कार्य आजीविका का साधन हो सकता है?

अनुराग : निःसंदेह। इस क्षेत्र में रोजगार के विपुल अवसर उपलब्ध हैं। इसके लिए आपके पास योग्यता, भाषा पर प्रभुत्व, देश-विदेश की जानकारी, नित नई रची जाने वाली रचनाओं को पढ़ने की ललक, आवाज में उतार-चढ़ाव, वाणी में नम्रता तथा समय की पाबंदी आदि अति आवश्यक गुण होने चाहिए। आपकी शैली भी विशेष हो, आपको अनुवाद करने का ज्ञान भी होना चाहिए। कई रेडियो स्टेशन हैं जहाँ रेडियो जॉकी की आवश्यकता होती है। आप अपने कार्य का प्रारंभ अपने क्षेत्रीय रेडियो स्टेशन से कर सकते हैं। अनुभव प्राप्त होने के बाद बड़े रेडियो स्टेशनों पर आपको काम करने के अवसर मिलते हैं।

प्रगल्भ : क्या आर.जे. बनने के लिए प्रशिक्षण संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है?

अनुराग : देखो प्रगल्भ, इसका उत्तर हाँ भी है और ना भी। हर रेडियो स्टेशन के अपने-अपने मापदंड और निकष होते हैं। कोई यह देखता है कि आपने प्रशिक्षण लिया है या नहीं। वहीं पर कई रेडियो स्टेशन सिर्फ आपकी कला, ज्ञान तथा प्रस्तुतीकरण की शैली देखकर आपका चयन कर लेते हैं। आजकल जगह-जगह रेडियो जॉकी से संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है।

प्रगल्भ : आर.जे. बनने के इच्छुकों को किस प्रकार की तैयारी करने की आवश्यकता है?

अनुराग : आर.जे. को अपने कान, आँखें निरंतर खुली रखने की जरूरत है। उसे जिस भाषा में बोलना है, उस भाषा को ज्यादा-से-ज्यादा सुनना होगा, उस भाषा का साहित्य पढ़ना होगा, रोज समाचारपत्र पढ़ने होंगे, इसके साथ ही अपने क्षेत्र का सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा ऐतिहासिक ज्ञान होना भी जरूरी है। उसे देश-विदेश की जानकारी रखनी होगी। इसके साथ ही अपनी एक भाषा शैली तैयार करनी होगी, अपने उच्चारण पर ध्यान देना होगा। भाषा के आरोह-अवरोह का ज्ञान बढ़ाना होगा। एक बढ़िया आर.जे. बनने की कोशिश हरदम जारी रखनी होगी क्योंकि कलाकार कभी तृप्त, संतुष्ट नहीं होता। उसे विशिष्ट लोगों के विशेष अवसर पर साक्षात्कार लेते हुए कार्यक्रम की प्रस्तुति करनी पड़ती है। इसलिए साक्षात्कार लेने की कुशलता उसमें होनी चाहिए।

कभी-कभी श्रोता के प्रश्नों का निराकरण आर.जे को करना पड़ता है, यह तभी संभव है जब उनके प्रश्नों के उत्तरों का ज्ञान उसके पास हो। कई बार श्रोता अपनी जिंदगी से निराश होकर आर.जे को फोन करते हैं, तब उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए आर.जे. का अपना मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन उपयोगी होता है। कई बार परीक्षाओं के पहले मुझे विद्यार्थियों के फोन आते हैं, कहते हैं “कल से परीक्षा शुरू हो रही है और मुझे बहुत टेंशन हो रहा है। लगता है कि मैंने जो पढ़ा है, मुझे ऐन मौके पर याद नहीं आएगा, मैं क्या करूँ? मेरी समझ में नहीं आ रहा है।” ऐसी स्थिति में मैं उनका मनोबल बढ़ाने का काम करता हूँ और कहता हूँ, “आपके मन में आने वाले विचार बहुत स्वाभाविक हैं। इस प्रकार के विचार आपको स्ट्रेस के कारण आते हैं। आप निश्चिंत रहिए। परीक्षा के दौरान आपको अपनी की हुई पढ़ाई याद आएगी। आप विचलित न हों मेहनत करते रहिए, आप जरूर परीक्षा में सफल होंगे।”

अगर आप एक अच्छे संवादक (Communicator) बनना चाहते हैं तो आप लोगों को देखकर तथा सुनकर अभ्यास द्वारा अपने-आपको तैयार कर सकते हैं। जब आप अपनी कही हुई बात को दुबारा सुनते हैं तो आपको लगता है कि इसे आप और अच्छी तरह से प्रस्तुत कर सकते थे। इस तरह आप स्वयं अपना गुरु बन सकते हैं। यदि आपको सफल आर.जे बनना है तो आपकी भाषा सहज, सरल, संतुलित, रोचक तथा प्रवाहमयी होनी चाहिए जो श्रोताओं की समझ में आसानी से आए और उनका मनोरंजन भी हो, साथ में उन्हें ज्ञान भी मिले।

प्रगल्भ : आर.जे. को अपनी भाषा पर प्रभुत्व बनाए रखने के लिए किस तरह के प्रयास करने चाहिए?

अनुराग : आर.जे. और भाषा मानो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए उसे भाषा पर प्रभुत्व पाने के लिए तथा वाक्पटुता बढ़ाने के लिए लोगों से बातचीत करना, पुस्तकें, समाचारपत्र पढ़ना, अच्छे वक्ताओं को सुनना आवश्यक है। इससे आपकी शब्दसंपदा बढ़ेगी। जिससे आपको शब्द चयन में सुविधा होगी। अपने करियर को सुदृढ़ बनाने के लिए भाषा शालीन, रोचक एवं प्रभावशाली होनी चाहिए। लोकोक्तियों, मुहावरों का प्रयोग यथासमय और आवश्यकतानुसार कर सकें तो सोने पे सुहागा।

आपमें ज्ञान पाने और आगे बढ़ने की ललक, लोगों से मेलमिलाप की भावना और कुछ कर गुजरने का जुनून है तो निःसंदेह आप इस क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित कर सकते हैं। अपने कार्य को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए आप निरंतर अभ्यास करते रहिए। जैसे – आप किसी विषय पर किसी व्यक्ति से बात कर रहे हैं तो उसे ध्वनिमुद्रित कीजिए और स्वयं सुनिए ताकि आपको अपनी गलतियों का अहसास हो, जिससे आप अगली बार अपनी गलतियाँ सुधार सकते हैं।

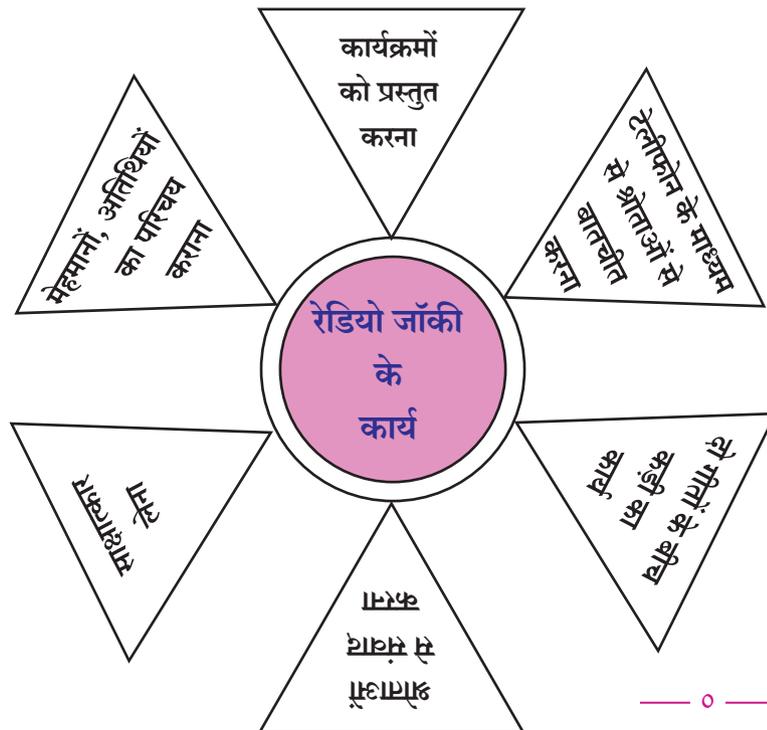
प्रगल्भ : आर.जे को तकनीकी के संदर्भ में किन-किन बातों की जानकारी होनी चाहिए?

अनुराग : आज का युग तकनीकी युग है। आर.जे को तकनीकी चीजों की जानकारी होनी ही चाहिए। अलग-अलग सॉफ्टवेयर जो हर दिन बाजार में आ रहे हैं, उनकी उपयोगिता, नई आनेवाली मशीनों के बारे में जानकारी, ध्वनिमुद्रण के बारे में जानकारी रखना आर.जे के लिए आवश्यक है।

प्रगल्भ : अनुराग जी ! आपके साथ हुई बातचीत के दौरान बहुत महत्वपूर्ण जानकारी मिल रही है। सर, मुझे तो लगता है कि आर.जे सामाजिक जागरूकता फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अनुराग : तुम्हारी बात बिल्कुल सही है। किसी भी काम को समाज से दूर रहकर नहीं किया जा सकता। आर.जे. का काम तो समाज के हर घटक से जुड़ा हुआ है। जैसे – हम अपने कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण दिवस, पोलियो अभियान, जल साक्षरता, बाल मजदूरी, दहेज समस्या, कन्या साक्षरता, विश्व पुस्तक दिवस, किसान और खेती का महत्त्व, व्यसन से मुक्ति, मतदान जनजागृति आदि विषयों पर चर्चा करते हुए मनोरंजनात्मक ढंग से लोगों के बीच में जागरूकता फैलाने का काम करते हैं।

- प्रगल्भ** : जी सर, मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ। अभी जो चुनाव हुआ है ना, उसमें मेरे कितने सारे दोस्तों ने बड़े उत्साह के साथ मतदान किया। सर, आप जैसे रेडियो जॉकी को सुनकर मेरे बहुत से दोस्त व्यसनमुक्त भी हुए। इस परिवर्तन का श्रेय मैं आर.जे को देना चाहूँगा।
- अनुराग** : यह तो हमारा फर्ज है।
- प्रगल्भ** : सर ! आर.जे. के क्षेत्र में जाने वाले नवयुवकों का भविष्य कैसा रहेगा, इस संदर्भ में थोड़ी-सी जानकारी दीजिए।
- अनुराग** : मैं यह देखता हूँ कि रेडियो का क्षेत्र कभी समाप्त न होने वाला जनसंचार माध्यम है। रेडियो जन-जन का माध्यम है। वह हमेशा रहेगा और लोगों के मन को छूता रहेगा। जनमानस को आगे बढ़ाने का हौसला देगा, नई-नई बातें बताएगा। उनके मनपसंद गीत सुनाएगा और यह सब उनकी (जनमानस की) अपनी भाषा में करेगा। प्रसारण के सब माध्यमों में रेडियो सबसे तेज प्रसारित और प्रेषित करने का सशक्त माध्यम है। संप्रेषण सभी के लिए एक समान है। एक ही भाषा, मनोरंजन, सबके लिए एक जैसा। रेडियो का भविष्य हमेशा उज्ज्वल रहा है। रेडियो के आरंभ से लेकर आज तक संसार के सभी माध्यमों में यह महत्त्वपूर्ण माध्यम रहा है। इसलिए इसका भविष्य हरदम उज्ज्वल है। प्रगल्भ, तुम्हें एक बात बताऊँ। इस क्षेत्र से जुड़ी चुनिंदा हस्तियाँ जिन्होंने घर-घर में अपनी छाप छोड़ी है - अमीन सयानी, काका कालेलकर, हरीश भीमानी आदि नाम आज भी लोगों के दिलों पर राज करते हैं। अतः मैं आप सभी से निवेदन करता हूँ कि मनोरंजन, जोश से भरपूर इसके विस्तृत क्षेत्र में अपने उज्ज्वल भविष्य के सपने संजोने के लिए कदम बढ़ाएँ। अपनी आवाज से पूरी दुनिया को मुट्ठी में कर लें। करियर की दृष्टि से आज का युवा वर्ग इस क्षेत्र में पदार्पण करे। इसके लिए सभी को शुभकामनाएँ देता हूँ। तुम्हें भी धन्यवाद देता हूँ। तुम्हारे कारण मैं नवयुवकों को आर.जे. संबंधी जानकारी प्रदान कर सका। तुम्हें भी भविष्य के लिए अनेकानेक शुभकामनाएँ देता हूँ।
- प्रगल्भ** : धन्यवाद अनुराग जी ! आज आपने रेडियो जॉकी के क्षेत्र के विविध आयाम, विस्तृतता तथा रोजगार के व्यापक अवसर, जैसे पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए जो जानकारी प्रदान की, वह हमारे विद्यार्थियों के लिए प्रेरक रहेगी। एक बार फिर बहुत-बहुत धन्यवाद तथा शुभकामनाएँ आपको भी !



पाठ पर आधारित

- (१) आर.जे. के लिए आवश्यक गुण लिखिए ।
- (२) सामाजिक सजगता निर्माण करने में आर.जे. का योगदान अपने शब्दों में लिखिए ।
- (३) आर.जे. के महत्त्वपूर्ण कार्य पर प्रकाश डालिए ।

व्यावहारिक प्रयोग

- (१) 'जलसंवर्धन' के किसी कार्यकर्ता के साक्षात्कार हेतु संहिता तैयार कीजिए ।
- (२) रेडियो जाँकी के रूप में 'होली' के अवसर पर काव्य वाचन प्रस्तुति के लिए कार्यक्रम तैयार कीजिए ।

